(External Evaluation)बाहय मूल्यांकन

बाहय मूल्यांकन :

Meaning of External Evaluation:

बाहरी मूल्यांकन : मूल्यांकन अध्ययनों का अनुभव रखने वाली किसी एजेन्सी या व्यक्ति द्वारा किए जाते हैं। बाहय मूल्यांकन अग्रेजी शब्द **External Evaluation** हिन्दी रूपातंर है। जिसका अर्थ हैं–बाहरी स्तर पर जांच करना।

बाहरी मूल्यांकन यह वह मूल्यांकन है जो किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है। जो सीधे मूल्यांकन किए जा रहे सिस्टम के विकास या संचालन में शामिल नहीं है, अर्थात परियोजना टीम के किसी व्यक्ति द्वारा। स्पष्ट रूप से इस तरह के बाहरी मूल्यांकनकर्ता के पास कई फायदे हैं। इसे आशा व्यक्त की जाती है। निष्पक्षता, निहित स्वार्थ की कमी और मामलों को नए दृष्टिकोण से देखने की क्षमता।

एक बाहरी मूल्यांकनकर्ता के पास कई नुकसान भी हैं। हालांकि जिनमें से अधिकांश रिश्तेदार मूल्य प्रणालियों से संबंधित हैं और मूल्यांकनकर्ता की भागीदारी के अभाव में परियोजना से संबंधित निर्णय हुए हैं।

बाहय मूल्यांकन के लाभ (Advantages of External Evaluation):-

1- इस में मूल्यांकनकर्ता बाहरी व्यक्ति होता है जो शिक्षण प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित नहीं होता है।

2- यह अपेक्षाकृत खर्चीली प्रक्रिया है।

3- यह छात्र की वास्तविकता से अपेक्षाकृत कम संबंध रखता है क्योंकि यह एक निश्चित समय अवधि में लिए गए परीक्षण से संबंधित होता है । संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया से इसका संबंध कमजोर जान पड़ता है।

4- यह निश्चित समय अवधि में कुछेक प्रश्न पत्रों के माध्यम से ली गई परीक्षाओं के द्वारा छात्रों का आकलन करता है।

5- इसमें पक्षपात व व्यक्तिगत पहचान की अपेक्षाकृत क्षीण संभावना पाई जाती है।

6- इसमें अपेक्षाकृत अधिक वस्तुनिष्ठता निहित होती है।

7- इसमें सतत् व व्यापक होने के गुण का अभाव पाया जाता है।

Scanned with CamScanner

8- यह पूर्व निर्धारित समय सारणी के अनुसार ही आयोजित किया जाता है।

सकारात्मक विशेषतायें व लाभः–

(1.) इससे कार्यकम्र के बारें में नई जानकारी मिलती है और इनमें पूर्वाग्रह की कोई संभावना नही होती। कार्यकम के बारें में बाहरी मूल्यांकन के अपने दृष्टिकोण हो सकते हैं परंतु एक ही कार्यकम को अलग नजरिए से देखना लाभप्रद हो सकता है।

(2.) इससे उन समस्याओं और कारणों का भी पता चलता है जिस पर संभवतः आंतरिक मूल्यांकन के दौरान ध्यान न दिया गया हो।

(3.) अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण प्रकिया है।

बाहरी मूल्यांकन की कमियांः–

(1.) यह प्रकिया अधिक मंहगी होती है।

(2.) इसमें उठाये गये विषय सीमित होते है।

(3.) यदपि विश्लेषण बहुत अधिक विस्तृत और विवेचनात्मक हो सकता है। फिर भी आवश्यक नही की दी गयी अनुशंसायें अधिक व्यावहारिक विकल्प हो।

(4.) किसी बड़े कार्यकम में इस तरह के विषयों और कारणों पर अधिक ध्यान दिया जाता हैं और केवल उस समय उपलब्ध परिस्थितों को ही ध्यान में रखा जाता है।

(5.) प्रकिया का मूल्यांकनः प्रकिया के मूल्यांकन में पूरी प्रकिया पर ध्यान दिया जाता है। इसमें यह देखा जाता है कि प्रकिया को किस प्रकार बनाई गई योजना के अनुसार कियान्वित किया जाता है और इसकी गुणवत्ता कैसी थी।

(6.) परिणामों का मूल्यांकनः इसमें कार्यकम के परिणामों में ध्यान दिया जाता है और देखा जाता है कि क्या कार्यकम से वांछित परिणाम प्राप्त हुए और किस स्तर तक।

(7.) कार्यकम का मूल्यांकनः इसके अन्तर्गत कार्यकम की प्रकिया और नतीजों दोनों का ही मूल्यांकन किया जाता है। इसमें यह देखा जाता है कि क्या कार्यकम से वांदित परिणाम प्राप्त हुए और किस गुणवत्ता के साथ वे परिणाम मिल पाये। इसमें परिणामों को प्राप्त करने के लिए अपनाई गयी प्रकिया और जानकारियां भी कार्यकम के आंकलन का एक भाग होती है।

(8.) प्रभाव का मूल्यांकनः इसके अन्तर्गत कार्यकम के परिणामों का ूल्यांकन किया जाता है और यह देखा जाता है कि इस कार्यकम के उद्देश्य पूरे हो पाये अथवा नही।

(9.) समवर्ती मूल्यांकन व रचनात्मक मूल्यांकनः कार्यकम के दौरान बार–बार कई स्तरों पर यह मूल्यांकन किया जाता है ताकि इसका प्रभाव चलाये जा रहे कार्यकम पर पड़े। आमतौर पर समवर्ती मूलयांकन बाहरी एजेंन्सियों द्वारा किया जाता है। यदि इसको आंतरिक तौर पर किया जाये तो इसको मॉनीटरिंग का ही एक भाग माना जाऐगा।

Scanned with CamScanner